तलिापयिा पार्वोवायरस

[स्रोत: द हिंदू]

तलिापयिा पार्वोवायरस (TiPV) की भारत में पहली उपस्थितितिमलिनाडु में देखी गई है, जहाँ इसका **देश के जलीय कृषि** पर काफी नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

- यह वायरस मीठे जल की मछली प्रजाति [तलिापयिा] में पाया गया है और उच्च मृत्यु दर के कारक के चलते इसको लेकर चिंता बढ़ गई है।

तलिापयिा पार्वोवायरस:

- **परिचय:**
  - TiPV एक **वायरल रोगजनक** है जो मुख्य रूप से तलिापयिा को प्रभावित करता है।
  - यह **पारवोवरिडिा परविार** से संबंधित है, जो अपने छोटे, अपरबिद्ध, सगिल स्ट्रैंडेड DNA वायरस के लिये जाना जाता है।
- **उद्भव और प्रभाव:**
  - पहली बार इसकी उपस्थिति वर्ष 2019 में चीन में और वर्ष 2021 में थाईलैंड में दर्ज की गई। भारत TiPV की घटना की रिपोर्ट करने वाला तीसरा देश है।
    - TiPV के कारण मछली फार्मों पर मृत्यु दर 30% से 50% तक देखी गई है।
    - साथ ही प्रयोगशाला में इसने 100% मृत्यु दर दर्ज की है जो इसके विनाशकारी प्रभाव को उजागर करती है।
- **TiPV प्रकोप के परिणाम:**
  - TiPV का प्रकोप मीठे जल के निकायों की जैवविविधता और पारिस्थितिकी के लिये भी खतरा उत्पन्न कर सकता है क्योंकि तलिापयिा एक आक्रामक प्रजाति है जो भोजन एवं आवास स्थान के लिये मछली की स्थानीय प्रजाति के साथ प्रतिस्पर्द्धा कर सकती है।
  - TiPV का प्रकोप उन लोगों की खाद्य सुरक्षा और पोषण को भी प्रभावित कर सकता है जो भोजन में प्रोटीन और आय के स्रोत के रूप में तलिापयिा पर निर्भर हैं।

तलिापयिा मछली के बारे में मुख्य तथ्य:

- **परिचय :**
  - तलिापयिा मीठे जल की मछली प्रजाति है जिसका पालन भारत में व्यापक स्तर पर किया जाता है और भोजन के रूप में उपयोग की जाती है। यह **पर्सीफोर्मेस प्रजाति** के अंतर्गत **सिक्लिडि परविार** से संबंधित है।
  - ये मछलियाँ **मूलतः अफ्रीका** में पाई जाती हैं और व्यापक रूप से खाद्य स्रोत के रूप में लोकप्रियता हासिल कर चुकी हैं।

- **भारत में तलिापयिा का पालन :**
  - तलिापयिा का पालन देश के वभिन्नि हसि्सों, वशिेषकर आंध्र प्रदेश और केरल में कयिा जाता है।
  - नील तलिापयिा और मोज़ाम्बकि तलिापयिा सहति वभिन्नि तलिापयिा प्रजातयिों के आगमन/प्रवेश के परणिामस्वरूप ववधि मत्स्यपालन पद्धतयिों की उत्पत्त हुई है।
    - 1970 के दशक में लाई गई नील तलिापयिा को इसके बड़े आकार और उत्पादन के पैमाने के लयि पसंद कयिा जाता है।
      - **मोज़ाम्बकि तलिापयिा,** जसि तमलि में "जलिाबी" कहा जाता है, को 1950 के दशक में भारतीय अलवणीय जल नकियों में छोड़ा गया था।
      - मोज़ाम्बकि तलिापयिा **जल में कम ऑक्सीजन स्तर के प्रत अपनी अनुकूलनशीलता** के लयि जानी जाती है। यह वभिन्नि प्रकार के जलीय वातावरणों में जीवति रह सकती है।
  - भारत सरकार ने वर्ष 1970 में वशिष्टि तलिापयिा प्रजातयिों, अर्थात् **ओरयिोक्रोमसि नलिोटकिस (*Oreochromis Niloticus*)** एवं **लाल संकर प्रजात** के आयात को अधकृित कयिा। इन प्रजातयिों को इनके **तेज़ी से वकिास और बाज़ार की मांग** के कारण पसंद कयिा गया, जसिसे मत्स्यपालन पर नयिंत्रण बना रहा।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/tilapia-parvovirus